आतंकवाद एक वैश्विक चुनौति

नन्द राम खटीक

व्याख्याता राजनीति विज्ञान

बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय अलवर (अलवर)

प्रस्तावना - आतंकवाद यह कोई सिद्धांत या विचाराधारा नहीं वरन् एक तरीका, एक प्रकार, एक उपकरण है, जिसके माध्यम से वैश्विक स्तर पर भय, हिंसा बल प्रयोग द्वारा आतकी वातावरण बनाने का प्रयत्न किया जाता है। आज पूरी दुनिया आतंक के साये में जीने को मजबूर है। आज आतंकवादियों के हमले से विश्व का कोई भी भाग सुरक्षित नहीं दिखाई देता है। आतंकवाद विकसित एवं सम्पन्न सम्राज्यवादी राष्ट्रों की वह नाजायज संतान है, जिसका काम विश्व के विकासशील राष्ट्रों में विध्वंस तथा विखण्डन करना मात्र है और ऐसे कृत्यों के लिए इनके संगठनों को हर प्रकार की सहायता धनबल, शस्त्रबल उपलब्ध कराया जाता रहा है यही कारण है कि इन संगठनों के उद्भव व विकास का स्त्रोत अज्ञात होते हुए भी ये संगठन व इनकी गतिविधियाँ सारे विश्व में अबाध गति से फलफूल रही है।

वर्तमान में नस्ली, मजहबी और सांस्कृतिक वर्चस्ववादी आतंकवाद बढ़ रहा है। आतंकवाद की शक्ल में दृश्य-अदृश्य छाया युद्धों का अन्तहीन सिलसिला चल पड़ा है। भारत सहित दक्षिण एशियाई देश तो लगातार इसमें झुलस रहे हैं वरन विश्व की महाशक्ति अमेरिका भी इसका अपवाद नहीं रहा है। आतंकवाद रूपी दावानल जल्दी थमेगा इसके आसार दूर-दूर तक दिखाई नहीं दे रहे हैं। आज आतंकवाद का वैश्वीकरण हो गया है।

आतंकवादियों के लक्षण व उद्देश्य

- आतंकवाद कुछ गिने चुने लोगों द्वारा संगठित नियोजित तथा जानबूझकर किया जाना वाला प्रायोजित हिंसात्मक कृत्य है।
- यह एक राजनीति से प्रेरित हिंसा है, जिसका एक मात्र उद्देश्य वर्तमान शासन व्यवस्था को उखाड़ फेंकना या चुनौती देना है।
- यह सदैव गैर कानूनी व अमानवीय तथा लोकतंत्र विरोधी गतिविधियों में लिप्त रहते है।
- इनकी राजनीति बहुत ही सुनियोजित एवं गोपनीय तरीके से बनाई जाती है व अत्यधिक परिष्कृत एव आधुनिक हथियारों का प्रयोग किया जाता है।
- आतंकवादी अपनी माँगे मनवाने हेतु नागरिकों पर मानसिक दबाव डालने व शारीरिक कष्ट देने हिंसा का प्रयोग करते हैं।
- आतंकवादियों के निशाने, भीड़-भाड़ युक्त नागरिक इलाके, कोई विशेष समुदाय के व्यक्ति, सशस्त्र सैनिक, मॉल, पर्यटन स्थल, आदि होते हैं।
- आतंकवादियों का उद्देश्य तस्करी करना, नशीले पदार्थों की अवैध बिक्री, चोरी छिपे आधुनिक हथियारों की खरीदी, विदेशी देशों से सहायता प्राप्त करना, नकली नोटों का प्रसार कर अर्थव्यवस्था को चौपट करना, उत्पीड़न व शोषण के विरुद्ध संघर्ष करना।

आतंकवाद के कारण -

- आतंकवाद को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका राजनीतिकस्वार्थों की पूर्ति, राजनीतिक भ्रष्टाचार, अपराधियों को राजनीतिक संरक्षण देना, विदेशी शक्तियों व पड़ोसी शत्रु राष्ट्रों द्वारा राजनीतिक अस्थिरता उत्पन्न करना उग्र आतंकवादी संगठनों को राजनीतिक प्रश्रय देना, आर्थिक सहायता करना व धनाढ्यों के वैभव व शौक शौकत को देखकर नवयुवक वर्गों द्वारा वैभव प्राप्त करने के गलत तरीकों को अपनाने की रही है।

❖ सामाजिक पिछड़ापन, अन्धविश्वास, परम्पराएं, धर्मान्धता व अशिक्षा का बोलबाला आदि स्थितियाँ नवीनता को स्वीकार नहीं करती, ऐसे में धर्म, परम्परा के नाम पर चालाक व पढ़े लिखे लोग उन्हे आतंकी कार्यवाहियों में संलग्न कर लेते हैं।

❖ आतंकवाद को प्रोत्साहित करने का एक बड़ा कारण गरीबी व बेरोजगारी है। भूख से तड़पता पेट गुनाह करने को मजबूर हो जाता है। विश्व में आतंकवाद पनपने के पीछे भूख, अभाव, शोषण व उपेक्षा प्रमुख है। आर्थिक असमानता, क्षेत्र विशेष का पिछड़ापन, वर्ग विशेष का आर्थिक शोषण, आर्थिक अपराधों में वृद्धि, पूँजी पतियों को अनैतिक तरीकों से लाभ पहुंचाना आदि सहायक है।

❖ आतंकवाद का सबसे भयावह पहलू आतंकवादी धर्म के नाम पर कायरतापूर्ण और घृणित अपराध कर रहे हैं। आतंकवादी की यह प्रवृत्ति प्रकृति के नियमों का खुला उल्लंघन है, जो जीवन दे नहीं सकता उसे जीवन लेने का कोई अधिकार नहीं है। ये विश्वस्तर पर धार्मिक, साम्प्रदायिक हिंसा फैलाकर मानव जाति का अस्तीत्व ही समाप्त करना चाहते हैं। अफगानिस्तान के तालिबान और जम्मू-कश्मीर में अराजकता फैलाने वाले आतंकवादियो को बालपन से ही शस्त्र चलाने, युद्धविद्या, दूसरे धर्मो के अनुयायियों, उनकी सभ्यता, संस्कृति और लोकतंत्र के प्रति घृणा का पाठ पढ़ाना व अपने धर्म से सम्बधित मदरसों में उग्रवाद का प्रशिक्षण दिया जाता है तथा बाल मस्तिष्क में ऐसे घृणा के बीज बो दिए जाते है जिससे अलगाव, हिंसा विद्रोह व विव्देष की भावना विकसित होने लगती है।

❖ बहुजातीय और बहुसांस्कृतिक समाजों में सांस्कृतिक श्रेष्ठता की उग्र भावना, कुछ राष्ट्रों द्वारा अपनी संस्कृति को दूसरे राष्ट्रो पर थोपने के कारण उग्रवाद आज सम्पूर्ण विश्व में अपने पैर फैला रहा है और आतंकवादी गतिविधियों को बढ़ावा मिल रहा है। कट्टर धार्मिक प्रशिक्षण केन्द्र, स्वधर्म सर्वोपरिता की भावना, धर्म के नाम पर नैतिकता विहीन कार्य आदि आतंकवाद के जन्म में सहायक है।

❖ वर्तमान में आतंकवाद के वैश्वीकरण का प्रमुख कारण सूचना प्रौद्योगिकी द्वारा सुलभ आधुनिक सुविधाओं जैसे मोबाईल, सम्प्रेषण तकनीकि की वैश्विक व्यवस्था (GSM) ई-मेल, सेलफोन व ग्लोबल पोजीशन सिस्टम (GPS) का सरलता से उपलब्ध होना है व इनके कारण सुरक्षा जाँच एजेसियों की नजरो से बचने के रास्ते भी आसान बन गए हैं।

प्रमुख आतंकवादी सक्रिय संगठन

• आतंकवाद के वैश्विक व राष्ट्रीय स्तर पर सक्रिय संगठनों में अलकायदा (ओसामा बिन लादेन) जमात ए इस्लाम, लश्कर ए तोयबा, हिजबुल पार्टी ऑफ गॉड, जैश-ए-मोहम्मद, ब्लैक पैंथर, टाइगर्स ऑफ दि गल्फ, अलबदर, अल-जेहाद समूह, हामास इस्लामिक रोसिस्टन्स आंदोलन, सेन्डिरो लुमीनोसो आदि है।

आतंकवादियों द्वारा अपनाए जाने वाले साधन -

▪ आतंकवादी हिंसात्मक तरीकों व आपराधिक गतिविधियों जैसे विस्फोट, विमान अपहरण, हत्याएं। आक्रमण, फिरौती वसूलना, भय दिखाकर कार्य करवाना आदि साधनों का सहारा लेते हैं।

▪ आतंकवाद की भावना दर्शाने के लिए वे विद्रोह, बलप्रयोग, **दंगे** करवाना, हिंसा की धमकी, गोरिल्ला युद्ध, व्यक्तिगत हिंसात्मक कृत्य, स्कूल व कालेजों को निशाना बनाकर आतंकवादी वातावरण निर्मित करते हैं।

▪ आतंकवादियों द्वारा अत्याधुनिक हथियार जैसे - ए. के. - 47, ए. के. - 6 राइफलें, आर.डी.एक्स विस्फोटक, टाईम बम, मानव बम, मिसाईलें, छोटे राकेट लाँचर, नाभिकीय, जैविक व रासायनिक हथियारों के माध्यम से जहरीली गैसे फैलाना आदि साधनों का प्रयोग किया जाता है।

▪ आतंकवादी भय निर्मित करने हेतु ब्लेक मैलिंग, आगजनी, पीने के पानी को दूषित करना, खाद्य पदार्थों में जहर घोलना आदि प्रयोग करते हैं।

▪ आतंकवादी को प्रशिक्षण देना, उनमें झूठ व नफरत फैलाना व मन में बदले की भावना पैदा करना, धर्मान्धता, जिहाद की भावना भरना आदि कृत्य किए जाते हैं।

आतंकवाद की अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति - अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर परमाणु अप्रसार आतंक, भूमण्डलीकरण के नाम पर आर्थिक आतंक, पर्यावरण प्रदूषण व मानवाधिकार के नाम पर अमेरिका ने सम्पूर्ण विश्व में आतंक फैला रखा है व अपने आर्थिक हितों के लिए अमरिकी संस्था सी.आई.ए. के माध्यम से वहाँ की विभिन्न सरकारों द्वारा विश्व के पचास से अधिक क्रूर सत्तापलटु सैनिक अधिकारी, तानाशाहों व अलोकतांत्रिक शासकों को समर्थन व संरक्षण दिया है।

11 सितम्बर 2001 को आतंकवादियों द्वारा अमेरिका के वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर और पेंटागन की इमारतों को ध्वस्त करने और हजारों लोगों को मौत के मुंह में धकेल देने की घटना के कारण अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के पूरे : समीकरण बदल गए है जो अमेरिका अपने को विश्व की एक मात्र महाशक्ति, सर्वश्रेष्ठ परमाणु ताकत सम्पन्न राष्ट्र, सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति, बहुत बड़ा कुटनीतिज्ञ मान रहा था। विश्व के सामने मजबूर सा हो गया है विगत कुछ वर्षो में अमेरिका के अतिरिक्त लंदन तथा जोर्डन में 2005 में बम विस्फोट, अमेरिका के ही बोस्टन मैराथन रूट पर 2013 में किया गया आतंकी विस्फोट तथा फ्रांस, जर्मनी, जापान, भारत व एशियाई राष्ट्रों में अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद ने भय, हिंसा, व अराजकता का वातावरण निर्मित किया है।

एक ओर एशिया महादीप में एक से एक बड़े महापुरुषों ने जन्म लिया है, तो दूसरी ओर दुनिया के क्रूरतम आतंकवादी भी इसी धरती पर पैदा हुए है। एशिया महादीप में चारों ओर फैले आतंकवाद ने आज लोकतंत्र की अस्मिता पर खतरा पैदा कर दिया है। पश्चिमी एशिया में इजराइल के दो शहरों में फिलीस्तिनी आतंकवादी समूह हमास के आत्मघाती दस्तों द्वारा हमला, इजरायल द्वारा फिलिस्तिनी शहरों जैनिंग व गाजापट्टी पर हमला, श्रीलंका में तमिलों व सिंहलियों के मध्य संघर्ष नेपाल में माओवादी कम्युनिस्टों की दहशतगर्दी, बांग्लादेश में आतंकी हमले, अफगानिस्तान में तालिबान विरोधियों में 'नार्दन एलायंस' के नाम से आतंकवादी हमले तथा अल्जीरिया, सूडान, मिस्त्र, तुर्की, जोर्डन, लीबिया, ईरान, ईराक आदि देशों में भी आतंकवादी वातावरण पनप रहा है।

सोवियत संघ के विघटन के बाद मध्य एशिया में इस्लामिक आतंकवाद ने पैर जमाना प्रारंभ किया चेचन्या को केन्द्र बनाकर रूस के प्रमुख शहरों पर एकाएक बम विस्फोट कर इनकी कार्यवाहियों ने रूस को सैनिक कार्यवाही के लिए बाध्य किया, चीन भी आतंकवादियों से अछूता नहीं है।

नार्को आतंकवाद 21 वीं सदी में सक्रिय होता जा रहा है। इसके अंतर्गत नशीले पदार्थों के क्रय-विक्रय करने वाले व्यापारियों को आतंकवादी गुटों व्दारा नार्कोटिक्स या ड्रग्स सुलभ कराना (कोकीन, अफीम, कन्नाबीस, हीरोइन), अवैध तरीके से तस्करी को बढ़ावा देना, अवैध अप्रवास को प्रोत्साहन जिससे राष्ट्रों की युवा पीढ़ी व मानव संसाधन व्यापक रूप बर्बाद हो रहे हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आतंकवाद को रोकने हेतु संयुक्त राष्ट्र के माध्यम से जिसके अंतर्गत सितम्बर 2006 में वैश्विक आतंकवाद रोधी रणनीति, सार्क सम्मेलनों में आतंकवाद विरोधी, घोषणा पत्र व अमेरिका व युरोपीय राष्ट्रों द्वारा भी आतंकवाद विरोधी प्रयास किए जा रहे हैं।

आतंकवाद का भारतीय परिदृश्य - दक्षिण एशिया में भारत आतंकवाद से सर्वाधिक अधिक प्रभावित राष्ट्र है। सीमापार से आतंकवादी घटनाओं में वृद्धि तथा विदेशी हस्तक्षेप ने भारत में अस्थिरता और अशान्ति को बढ़ाने में पूरजोर प्रयास किए हैं, भारत में सक्रीय आतंकवाद को प्रमुख दो वर्गों में विभाजित कर प्रथम सीमापार से आतंकवाद व दूसरा नक्सली आतंकवाद को व्यक्त किया जा सकता है।

भारत में आतंकवादी की सबसे सक्रिय गतिविधियों का केन्द्र जम्मू कश्मीर रहा है। आज भी भारत इस क्षेत्र में पाक प्रायोजित आतंकवाद से जूझ रहा है। पाकिस्तान द्वारा 'आपरेशन टोपाक' नामक योजना बनाई जिसके माध्यम से तीन स्तरों में, प्रथम स्तर पर कश्मीर में विद्रोह करना, आतंकी प्रशिक्षण देना, संचार व्यवस्था को विध्वंस करना सीमा क्षेत्रों पर कब्जा करने की नीति । दूसरे स्तर पर भारत पाक सीमा पर तनाव बनाए रखना व श्रीनगर, बारामूला, पठानकोट, कारगिल, लेह लद्दाख को लक्ष्य बनाकर सैनिक मुख्यालय, व सुरंगों दूरदर्शन केन्द्र, हवाई पट्टियों को नष्ट करना। तीसरे

स्तर पर जेहाद के माध्यम से कश्मीर को आजाद कराना। इस समस्या के अन्तर्राष्ट्रीयकरण को बढ़ावा देना, इन स्तरों को कार्यरूप में परिणित करते करते पाकिस्तान स्वयं आतंकवादी प्रशिक्षण केन्द्र राष्ट्र बन गया है।

आज भारत में लश्कर ए तोयबा, अलकायदा, जैस - ए - मुहम्मद, लिट्टे, सिमी जैसे 31 से अधिक संगठन सक्रिय है व उनके द्वारा पाक की गुप्तचर शाखा आई. एस. आई. के इशारे पर जैसे- कारगिल संकट 1999, 13 दिसम्बर 2001 को भारतीय संसद पर आतंकवादी हमला, जुलाई 2006 में मुम्बई के ट्रेनों में विस्फोट, 26 नवम्बर 2008 को मुम्बई के ताज होटल, ओबेराय होटल में आतंकी उत्पाद, गुजरात में साम्प्रदायिक दंगे, अक्षरधाम मंदिर पर हमला, पठानकोट हमला 2016, उरी हमला 2016 आदि घटनाओं से भारत को निरंतर जूझते रहना पड़ रहा है।

भारत में नक्सलवाद एक नासूर बनकर उभर रहा है। जिसने भारत के कई राज्यों को प्रभावित किया है। झारखण्ड में माओवाद की चपेट में। उड़ीसा लालरंग में, आन्धप्रदेश में उड़ीसा व छत्तीसगढ़ से लगी सीमा वाले दंडकारण्य इलाके में महाराष्ट्र में गढ़चिरौली, बिहार में छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश आदि स्थानों पर इनका प्रभाव रहा है।

भारत द्वारा इन आतंकवादी व नक्सलवादी गतिविधियों पर नियंत्रण करने हेतु 'हिमायत स्कीम' सर्जिकल स्ट्राइक, रोशनी परियोजना लागू कर प्रयास किये जा रहे हैं।

आतंकवाद को रोकने हेतु उपाय व सुझाव -

➢ आतंकवादी समस्याओं को अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय स्तर पर राजनीतिक स्वार्थों से ऊपर उठकर, समस्याओं को टालने या लम्बित करने के स्थान पर विचार विमर्श व आम सहमति से हल किया जाना चाहिए। आतंकवाद को नियंत्रित करने हेतु शासन व जनता के मध्य व्यापक सहयोग होना चाहिए। जिससे आम नागरिकों को आतंकवाद के भयंकर व दीर्घकालिन परिणामों की जानकारी देकर उनमें जनजागृति पैदा करना व आतंकवाद से भयभीत न होकर उनके विरूद्ध लड़ने की इच्छा शक्ति जागृत करने की प्रेरणा प्राप्त हो सके।

➢ आतंकवाद को खत्म करने हेतु अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय स्तर पर प्रगतिशील शिक्षा की आवश्यकता है। जिससे छात्रों का संपूर्ण मानसिक व नैतिक उत्थान हो सके जिससे वे क्रोध के वशीभूत होकर आतंकवाद का मार्ग न अपनायें वे देश की उन्नति व विकास में सहयोग प्रदान कर अपने कर्तव्यों का निर्वाह कर सकें।

➢ आज आतंकवाद का वैश्वीकरण हो जाने के कारण इस समस्या का समाधान विश्व स्तर पर राष्ट्रों द्वारा आतंकवाद के विरूद्ध एकजुट होकर ऐसा वातावरण निर्मित करना चाहिए जिससे उसे समूल नष्ट किया जा सके क्योंकि यह चुनौती किसी एक देश की नहीं बल्कि पूरी मानव जाति की है।

➢ गरीबी व बेरोजगारी दूर करने हेतु राष्ट्रों द्वारा प्रतिवर्ष करोड़ों व्यक्तियों के लिए रोजगार की व्यवस्था करनी होगी व आर्थिक असमानता की भावना को कम करना होगा जिससे सामाजिक व आर्थिक अन्याय दूर हो सके।

➢ राष्ट्रों की सरकारों द्वारा आतंकवादियों के साथ किसी प्रकार का समझौता नहीं करना चाहिए व आतंकवादी गुटों के क्रिया-कलापों की सूचना एकत्र कर जानकारी देना व घुसपैठ पर नियंत्रण के तकनीकी साधनों में सुधार लाना चाहिए।

अन्त में जिन परिस्थितियों में मानव मन बर्बरता और उन्माद से भर जाता है। उन परिस्थितियों को समाप्त करना होगा। सार्थक विश्व व्यापी योजनाओं, दृढ़ राजनीतिक व प्रशासकीय इच्छा शक्ति व क्षमता, दूरदर्षिता व धैर्य के सहारे एक जुट होकर आतंकवाद का जड़ से सफाया किया जा सकता है। आतंकवाद के विरुद्ध लड़ाई में हम थकेंगें नहीं, रूकेंगें नहीं और अन् त में विजय मानव जाति की होगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. मेजर जनरल विनोद सहगल, अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद, प्रभात प्रकाशन, दरिया गंज नई दिल्ली।
2. प्रतिमा चतुर्वेदी, नक्सलवाद आतंक या आन्दोलन, वायकिंग पब्लिकेशन्स 22 गोदाम जयपुर
3. रामदेव भारव्दाज, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति और समसामयिक राजनीतिक मुद्दे, मध्यप्रदेश ग्रन्थ अकादमी भोपाल।
4. जितेन्द्र सिंग, दक्षिण एशिया में आतंकवाद की समस्या, महिप बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।
5. जे. एन. दीक्षित, भारत की विदेशनीति और आतंकवाद, ज्ञान पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली ।
6. कृष्णानंद शुक्ला, भारत पाक सम्बन्ध, राज पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
7. अर्चना शर्मा व जी. जी. ललित, भारत की आन्तरिक सुरक्षा को खतरा, मोहित, पब्लिकेशन दरिया गंज, नई दिल्ली।